21

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर में नम्रता (दीनता)

(गलातियों 5:22, 23)

आत्मा के फल की आत्मिक विशेषता को NASB में ''विनम्रता'' और KJV में ''दीनता'' कहा गया है। हम इस खूबी को यह बताते हुए कि यह माता-पिता को कैसे प्रभावित करता है, घर पर लागू करना चाहते हैं।

लोग माता-पिता होने पर अलग-अलग प्रकार से प्रतिक्रिया देते हैं। कई तो अपने बच्चों को आहत करते हैं, जबकि अन्य अपने बच्चों की उपेक्षा करते हैं। बेशक मसीही माता-पिता अपने बच्चों का पालन पोषण और उनके साथ व्यवहार सही करना चाहते हैं; वे अपने बच्चों को अच्छे लोग और विश्वासी मसीही बनाना चाहते हैं। परन्तु माता-पिता बनना आसान नहीं है। मसीही माता-पिता जो अपने बच्चों को मसीही बनाना चाहते हैं इस बड़े लक्ष्य को कैसे पा सकते हैं? बच्चों पर कितना दबाव डालना सही हो सकता है? माता-पिता को बच्चों की गलती करने पर क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए? यदि हम में नम्रता की खूबी है तो हम उन प्रश्नों से निपटने के लिए अच्छी तरह तैयार होंगे।

नम्रता, या ''दीनता'' का गुण क्या है?

एक परिभाषा

नम्रता के लिए यूनानी शब्द ''prautes'' है।[1] यंग'स अनेटिकल: टू द बाइबल के अनुसार यह नये नियम में किसी न किसी रूप में सोलह बार मिलता है और KJV में इसका अनुवाद ''दीन'' या ''दीनता'' हुआ है।[2] NASB में एक बार, ''दीनता'' (2 कुरिन्थियों 10:1), एक बार ''दीनता'' (याकूब 1:21) एक बार ''ध्यान ... दिखाना'' (तीमुस 3:2) और तेरह बार ''विनम्रता'' या ''विनम्र''[3] के रूप में देता है। अन्य अधिकतर आधुनिक संस्करण (LB; NEB; NRSV; NIV) में गलातियों 5:23 में ''विनम्रता'' यूनानी भाषा पर अधिकारियों के अनुसार *prautes* का अनुवाद कठिन है। ''दीनता'' शायद वह शब्द है, जिसे हम याद रख सकते हैं।

परन्तु जैसा कि विलियम बार्कले ने कहा है कि दीनता शब्द में ''कमज़ोरी और मुर्दादिली, और शक्ति और पौरुष की कमी का सुझाव है''[4] जो मूल भाषा के शब्द के अर्थ से मेल नहीं खाता। आज के संसार में ''दीनता'' को आम तौर पर ''निर्बलता'' मान लिया जाता है, पर यहां इस्तेमाल शब्द किसी भी प्रकार निर्बलता का संकेत नहीं देता। ''विनम्रता'' अच्छा हो सकता है पर यह भी बिल्कुल स्पष्ट नहीं है, क्योंकि इसमें *prautes* की परिभाषा का केवल एक ही भाग है। बार्कले ने लिखा कि सांसारिक यूनानी लेखों में इस शब्द का इस्तेमाल कई प्रकार से होता था:

... व्यक्ति या वस्तुएं के जिनमें अपने आप में शान्तिदायक गुण ... आचरण की महानता ... विशेषकर उन लोगों के मामले में और उनकी ओर से जिनके हाथ में ताकत थी ... सही व्यवहार और माहौल [की] ... किसी बात को, हल्के से लेने की [जैसे सुकरात ने अपनी मृत्यु का सामना धैर्य से किया] ... उन जानवरों की जिन्हें पाला गया है, और जिन्होंने अनुशासन और नियंत्रण को मानना सीखा है ... [और] उस स्वभाव [की] जिस में सामर्थ और दीनता साथ-साथ चलते हैं।[5]

संदर्भ में शर्त

नये नियम में *prautes* की समीक्षा करने से हमें यह समझने की सहायता मिल सकती है कि इस शब्द में क्या सुझाव है। *Prautes* नम्रता और दीनता से जुड़ा है (इफिसियों 4:2; कुलुस्सियों 3:12)। यीशु ने कहा, ''मैं विनम्र और मन का दीन हूं'' (मत्ती 11:29; KJV; ''मैं दीन और मन में विनम्र'' हूं; NASB)। इस अर्थ में दीनता और नम्रता घमण्ड और अकड़ का विपरीत शब्द है। *Prautes* या विनम्रता 1 कुरिन्थियों 4:21 के कठोर न्याय से अलग है, जहां पौलुस ने लिखा, ''तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?'' यह लड़ाके मन से भी अलग है। प्रचारकों को बताया जाता है, उन्हें ''झगड़ालू नहीं होना चाहिए पर सब के साथ कोमल'' और ''सहनशीलता'' से विरोधियों को समझाना चहिए (2 तीमुथियुस 2:24, 25; देखें तीतुस 3:2)।

यीशु में दिखाया गया शब्द

Prautes को समझने का अब एक और ढंग यह है कि यीशु को ''दीन,'' या ''नम्र'' कहा गया है (मत्ती 11:28-30; देखें 21:5; 2 कुरिन्थियों 10:1)। यीशु ने इसे कैसे दिखाया? वह कमज़ोर नहीं था, वरना वह धन का लेन-देन करने वालों और कारोबारियों को मन्दिर से नहीं निकाल सकता था। वह कायर नहीं था, वरना वह उस क्रूस देने के लिए पकड़ने आई भीड़ का सामना करने के लिए खड़ा नहीं हो सकता था। दीन और नम्र होने के बावजूद कई बार वह क्रोधित हुआ। जब प्रेरितों ने छोटे बच्चों को उसके पास आने से रोकने की कोशिश की तो वह क्रोधित हुआ था (मरकुस 10:14)। यीशु के स्वभाव की पहचान सामर्थ और विनम्रता दोनों से करें! क्रोधित होने के समय वह क्रोधित होता था; पर जब क्रोधित नहीं होना चाहिए था तब वह क्रोधित नहीं होता था।[6]

प्रमाण संक्षेप में: सामर्थ वश में

प्रमाण यह सुझाव देता है कि *prautes* शब्द का सौम्यता या निर्बलता से कोई सम्बन्ध नहीं है। इससे शायद ''सामर्थ या शक्ति वश में'' होने जैस कुछ कहना बेहतर होगा। डब्ल्यू. ई. वाइन ने कहा है:

इसलिए यह स्पष्ट समझ आ जाना चाहिए कि प्रभु द्वारा दिखाई गई और विश्वासी को दी गई दीनता शक्ति का फल है। आम मान्यता है कि जब कोई व्यक्ति दीन होता है तो वह इसलिए नहीं कि वह अपनी सहायता नहीं कर सकता है। परन्तु इसलिए होता है क्योंकि

वह अपनी सहायता नहीं कर सकता; परन्तु प्रभु ''दीन'' इसलिए था क्योंकि उसके पास परमेश्वर के असीमित स्रोत थे, जिनका वह इस्तेमाल कर सकता था।[7]

बार्कले ने दीनता को दिखाने की व्याख्या अच्छी ही की:

लोगों के साथ पूर्ण शिष्टाचार के साथ हम तभी व्यवहार करते हैं जब हमारे पास *prautes* करता है कि हम बिना कटुता या असहनशीलता के कि हम बिना क्रोध के सच्चाई का सामना कर सकते हैं, और क्रोध करने के बावजूद पाप नहीं कर सकते, कि हम नम्र होकर निर्बल नहीं होते।[8]

यह गुण घर पर कैसे लागू हो सकता है?

स्पष्टतया, विनम्रता का दूत हर मसीही के जीवन में होना चाहिए। यीशु ने दीन लोगों पर आशीष की घोषणा की (मत्ती 5:5; देखें याकूब 3:13; 1 पतरस 3:4)।

जीवन के सम्बन्ध में, नम्रता माता-पिता होने पर लागू होती है। मसीही माता-पिता को कैसा व्यवहार दिखाना चाहिए? *Prautes* अर्थात दीनता या विनम्रता का व्यवहार है। इस व्यवहार को हम माता-पिता के आम व्यवहार पर देखते हैं, क्योंकि यह शब्द बार-बार अगुओं पर लागू होता है-जैसे यीशु और मूसा पर माता-पिता अगुवे ही हैं इसलिए यह शब्द उन पर लागू करके हम अच्छा करते हैं। ''नम्रता'' वैसे कामों के लिए भी प्रासंगिक है जो आम तौर पर माता-पिता करते हैं। इसका इस्तेमाल गिरे हुए किसी भाई या बहन (गलातियों 6:1) के पास जाने में सही व्यवहार के लिए जिसके साथ वही अपने विश्वास का बचाव करता है (1 पतरस 3:15) और जिसके साथ प्रचारक विरोधियों को सही करता है (2 तीमुथियुस 2:24, 25)। माता-पिता को अपने बच्चों को सुधारना आवश्यक है, इस कारण यह शब्द उनके काम के लिए लागू होना सही है।

यदि किसी माता-पिता में नम्रता का होना है तो इसे बच्चों के साथ व्यवहार में कैसे दिखाया जाएगा?

नम्र सामर्थ

पहले तो माता-पिता नम्र सामर्थ को दिखा सकते हैं। ''नम्र सामर्थ'' शब्दों को सुनकर मुझे अपने एक दामाद के अपनी नन्ही बेटी के साथ खेलने की बात याद आती है। वह एक कुर्सी पर बैठ जाता है, और उसके हाथों को पकड़ लेता, वह उसकी टांगों पर चढ़कर उसके पेट पर से होते हुई उसकी छाती पर चढ़ जाती जैसे पहाड़ पर चढ़ने वाला रस्सी का सहारा लेता है, जब तक वह उसके कंधों तक न पहुंच जाती फिर वह सिर झुकाकर उसे नीचे गिराने का नाटक करता और वह जल्दी से उसे नीचे की ओर झुलाता जिससे वह सुरक्षित नीचे उतर आती, हंसती और फिर से ऊपर चढ़ाने को कहती।

फिर मुझे अपने दूसरे दामाद के अपने छह हफ्ते के बेटे को नहलाने की बात याद आती है। मैं आज भी उस छह फुट चार इंच और दो सौ से अधिक पाउंड भार वाले आदमी को दस पाउंड के लड़के को पकड़ते, अपनी बाहों में ऐसे झुलाते देखने की कल्पना कर सकता हूं जैसे कोई नर्स बड़ी कोमलता से बच्चे को सम्भालती है। वह बच्चे को कसकर पर कोमलता से पकड़ता, और

बड़े ध्यान से साबुन और पानी लगाते हुए बड़े प्यार से उसे उसके साथ बातें करते हुए नहलाता और फिर उसे सुखाता। लड़का खुशी-खुशी आवाज़ें निकालता, मुस्कुराता और ऐसे लगता जैसे वह अपने नहाने के हर पल का आनन्द ले रहा हो, यह कहते हुए, ''मैं जानता हूं कि मैं ठीक हूं क्योंकि मेरे डैडी मेरी सम्भाल कर रहे हैं।''

परमेश्वर की प्रेरणा से पौलुस ने पिताओं से यह कहते हुए कि ''हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो'' (इफिसियों 6:4), वह ''दीनता'' या ''नम्रता'' (रिस न दिलाओ) जैसी किसी चीज़ के साथ ''सामर्थ'' (अनुशासन, ताड़ना करना) जैसे किसी चीज़ की सिफ़ारिश कर रहा था। फिर पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों से कहा कि वह उनके बीच में ऐसे ''नम्र'' रहा जैसे ''माता अपने बालकों का पालन पोषण करती है।'' उसने यह भी कहा कि उसने उन्हें ''जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है'' वैसे ही समझाया और प्रोत्साहित किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:7, 11)। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों के साथ ऐसे काम किया जैसे माता अपने बच्चों को सहलाती है और जैसे पिता अपने बच्चों को समझाता है। माता-पिता को अपने बच्चों के साथ दोनों तरह से काम करना चाहिए, सहलाते हुए भी और समझाते और ताड़ना देते हुए भी। बच्चे के मन में माता-पिता की सामर्थ पर कोई संदेह नहीं होना चाहिए। न केवल शारीरिक सामर्थ पर बल्कि व्यवहार, उद्देश्य और इच्छा की सामर्थ पर भी। न ही बच्चे के मन में माता-पिता की नम्रता पर कोई संदेह होना चाहिए, जिसे प्रेम, दीन, कृपा और दया में दिखाया जाता है।

नियंत्रण में सामर्थ

दूसरा माता-पिता सामर्थ को वश में रखना दिखाकर नम्र हो सकते हैं। जैसे घोड़े को लगाम में रहना या जंगली जानवर को पालतू बनाना होता है वैसे ही दीन माता-पिता के वश में वह सामर्थ और शक्ति है जो स्वाभाविक रूप में उसके पास है। बाइबल में परमेश्वर द्वारा माता-पिता की अपने बच्चों के ऊपर दी गई शक्ति (उदाहरण के लिए इफिसियों 6:1-4 में) का इस्तेमाल सावधानी से होना और उसे सोच समझकर किया जाना आवश्यक है। परमेश्वर ने माता-पिता को अपने बच्चों पर अधिकार स्वार्थ, कठोर या बेतुके ढंग से करने की इच्छा नहीं की।

नियंत्रण में सामर्थ का एक अच्छा उदाहरण है ''गवर्नर है'' जो ट्रकों को बहुत तेज चलने से रोकने के लिए इस्तेमाल होने वाला मशीनी यन्त्र है। एक अर्थ में परमेश्वर ने अपने बच्चों के माता-पिता के नियन्त्रण पर ''गवर्नर'' यानी अधिकार के ऊपर सीमा या माता-पिता की शक्ति पर ब्रेक रखी, जब उसने कहा कि माता-पिता अपने बच्चों को क्रोध न दिलाएं। अन्य शब्दों में माता-पिता अपने बच्चों के साथ अन्याय न करें। अपने बच्चों के ऊपर उसकी शक्ति का इस्तेमाल गलत रूप से नहीं करना चाहिए। यानी माता-पिता अपने बच्चों से अत्यधिक मांग, उनके साथ अत्यधिक कठोर न हों।

घर में माता-पिता की शक्ति का इस्तेमाल परमेश्वर के द्वारा नियन्त्रित होना चाहिए। यह तथ्य माता-पिता को शक्ति के विशेषाधिकार का इस्तेमाल न्याय और निष्पक्षता, सहजबुद्धि और करुणा के साथ करना आवश्यक है।

क्रोध की सही किस्म

तीसरा, माता-पिता क्रोध की सही किस्म का प्रदर्शन कर सकते हैं। अरस्तु के विवरण के अनुसार, *prautes* का अर्थ ''अच्छा मिज़ाज'' होना यानी ''बहुत अधिक या बहुत कम स्थिति के मध्य में होना है।'' जो व्यक्ति *praus* है वह ''सही बातों पर और सही लोगों के साथ, और, इससे बढ़कर, जैसा उसे होना चाहिए, जब उसे होना चाहिए, और जहां तक उसे होना चाहिए; क्रोध महसूस करता है। इनके अच्छे मिज़ाज वाला व्यक्ति बदला नहीं, बल्कि छूट देने की प्रवृत्ति रखता है।''[9]

क्या यह कहना अजीब लगता है, वह गुण है, जिसे मसीही माता-पिता के जीवनों में है? हम क्रोध को नासमझ मसीही में होने के रूप में सोचने के आदी हो सकते हैं यानी क्रोध आने पर हमें अपने आप में हीन भावना लग सकती है।

परन्तु बाइबल यह नहीं कहती कि क्रोध करना गलत ही होता है। हमारा बड़ा उदाहरण यीशु कई बार क्रोधित होता था, पर उसने पाप कभी नहीं किया। इसके अलावा वह दीन और नम्र था, इस कारण दीन या नम्र होना अपने आप में क्रोधित होने को निकाल नहीं देता। इफिसियों 4:26 कहता है, ''क्रोध तो करो, पर पाप मत करो: सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।'' बिना पाप किए क्रोध करना सम्भव है, इस कारण *क्रोधित होना या क्रोधित ढंग से काम करना हमेशा पाप नहीं होता।*

बेशक माता-पिता को केवल सही प्रकार का क्रोध दिखाने में चौकस होना चाहिए। ''सही किस्म'' का क्रोध क्या है? इसकी कम से कम तीन विशेषताएं हैं।

सही किस्म का क्रोध वह क्रोध है जो उन बातों की चिन्ता करता है जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। यीशु बड़े महत्व के नियमों में शामिल घटनाओं पर क्रोधित होता है-उदाहरण के लिए बच्चों को उसके पास आने से रोकने पर, या परमेश्वर के मन्दिर के दुरुपयोग होने पर। इसी प्रकार से हमारे बच्चों को हमारे क्रोध की प्रतिक्रियाओं (या क्रोध की कमी की प्रतिक्रियाओं) के द्वारा यह देखना आवश्यक है कि कुछ मामले दूसरों जितने गम्भीर नहीं हैं। डिश तोड़ देना या फर्श पर पानी गिरा देना हमारे लिए चिढ़ाने वाला हो सकता है, पर यह अन्य घटनाओं जितनी महत्वपूर्ण नहीं है। क्या हमें ऐसी बातों पर क्रोधित होना चाहिए? नहीं।

महत्वपूर्ण क्या है। बच्चों को सिखाना, झूठ न बोलना और चोरी न करना! उन्हें स्वार्थ पर काबू पाने, गुंडागर्दी करने, अत्याचार करने, असभ्य होने और हिंसक होने से बचाना। उन्हें जान बूझकर दूसरों को कभी परेशान या दूसरों का मज़ाक न उड़ाने का प्रशिक्षण देना। इन चिन्ताओं के परिणाम बड़े हैं। परमेश्वर का वचन और कलीसिया महत्वपूर्ण हैं। बच्चों को खाने के अच्छे तरीके सिखाने या न सिखाने से इन बातों को प्राथमिकता अधिक है; अनजाने में या उत्सुकता के कारण चीज़ें तोड़ने की प्रवृत्ति से बढ़कर हमें इन बातों का ध्यान करना चाहिए।

यह इस बात का सुझाव नहीं देता कि ''छोटी-छोटी बातों पर'' क्रोध करना हमेशा गलत होता है। हमें सावधान होना आवश्यक है कि हम ''छोटी बात'' किसे कहते हैं। आज्ञा न मानने वाले या दूसरों की बेपरवाही करना छोटी बात नहीं है।

दूसरा, सही किस्म का क्रोध गलत काम नहीं करवाता। यह पता लगाने का कि ''क्रोध तो करो पर पाप न करो'' की आज्ञा को हम ने माना है या नहीं, सबसे बढ़िया ढंग अपने आप से

पूछना है, ''क्या मेरे क्रोध ने किसी से गलत काम करवाया है। क्या इसने मुझ से पाप करवाया है?''

इस बात में कई बार अच्छे माता-पिता शक से पीड़ित होते हैं। हो सकता है कि वे क्रोध में हों और अपने बच्चों पर चिल्लाएं। फिर उन्हें लगता है कि वे गलत हैं। कई बार कोई माता-पिता बच्चे पर इसलिए चिल्लाते हैं कि वे उसे यह समझने में सहायता करना चाहते हैं कि जो उसने किया है वह बहुत खतरनाक, मूर्खतापूर्ण, गलत या नासमझ है। कई बार माता-पिता को लगता है कि कहीं क्रोध में उन्होंने अपने बच्चों को दण्ड देकर गलत तो नहीं किया। यहां पर वास्तव में बात क्रोध की नहीं है। सवाल यह है कि क्या दण्ड दिया जाना उपयुक्त था? यदि दण्ड उपयुक्त था तो दण्ड देने वाला पिता क्रोध में था या नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

माता-पिता द्वारा क्रोध में किया गया कोई काम क्या गलत होगा? एक उदाहरण है: परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेना सही नहीं है। यदि माता-पिता इतने क्रोधित हो जाएं कि वे व्यर्थ में परमेश्वर के नाम का इस्तेमाल करें या गाली दें या शपथ खाएं, तब उस क्रोध ने उनसे कुछ गलत करवाया।

मान लो कि क्रोध में एक पिता कुछ ऐसा करता है जिसके लिए बाद में उसे खेद होता है, यानी कुछ ऐसा जिसका उसे अहसास होता है कि गलत हुआ है। तो? उसे मन फिराकर क्षमा मांगनी चाहिए। पिता या माता की गलती और पश्चात्ताप भी बच्चों को सिखाने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। बच्चों को अपने माता-पिता को अपनी गलतियां मानते देखना आवश्यक है। बच्चों को बताया जाना चाहिए कि जब वे गलती करते या कुछ गलत करते हैं तो उन्हें क्या करना चाहिए। वे अपने माता-पिता के अपने गलती को मान लेने पर उन्हें सराहेंगे।

तीसरा, सही किस्म का क्रोध वह क्रोध है जिसे तुरन्त भुलाया जा सकता है। इफिसियों 4:26 कहता है कि ''सूर्य अस्त होने तक'' हमारा क्रोध न रहे। माता-पिता और बच्चों के साथ-साथ यह नियम पतियों और पत्नियों के लिए भी अच्छा है। समस्या जो भी हो, हमें इसको देखना आवश्यक है। समस्या के सुलझ जाने पर, क्रोध को भुला दिया जाना चाहिए।

कई बार, दीन माता-पिता को क्रोध *आ जाता है।* ऐसा आमतौर पर बच्चे के परमेश्वर के नियम तोड़ने और इतना बड़ा होने पर होता है जब उसे समझ है कि सही क्या है और गलत क्या। शायद उसने जान-बूझकर किसी का दिल दुखाया है, अपनी मां के साथ बदतमीजी से बात की है, या चोरी की है, या झूठ बोला है या किसी के साथ छल किया है। उसने परमेश्वर की निन्दा भी की हो सकती है या सरेआम विद्रोह किया हो सकता है। ऐसे समयों में बच्चे को यह देखना आवश्यक है कि ऐसे मामले माता-पिता के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। आज्ञा न मानने, बदतमीजी करने, या विद्रोह करने की घटनाओं में माता-पिता को बच्चे के व्यवहार को पूरी तरह से अस्वीकार न करना दिखाने का अधिकार है। माता-पिता क्रोध भी दिखा सकते हैं, यदि यह क्रोध वश में है।

इन परिस्थितियों में क्रोधित होने वाले मसीही माता-पिता उपयुक्त अनुशासन के अनुसार बच्चे को सुधारते हुए इस समस्या से सही ढंग से निपटते हैं। क्रोध को दिखाकर या अस्वीकृति जताकर, और दण्ड सुनाकर या देकर, पिता या माता, विशेष रूप में बच्चे के पश्चात्ताप को दिखाने पर बच्चे को क्षमा करते हैं और उस पर और बात करते हैं। फिर माता-पिता बच्चे को आश्वस्त करते हैं कि उसे बिना शर्त प्रेम किया जाता है। क्रोध की सही किस्म यही है यानी वह क्रोध जो

जल्दी से खत्म हो जाए।

सारांश

आप अपने बच्चों को कैसे लोग बनाना चाहते हैं? क्या आप उन में इन विशेषताओं को पाना पसन्द करेंगे जिन में यह बात की गई है? क्या आप उन्हें मज़बूत परन्तु नम्र बनाना चाहते हैं? क्या आप उन्हें चाहेंगे कि वे नियन्त्रण में सामर्थ दिखाएं, मज़बूत बनें पर अधीनता को मानने वाली-परमेश्वर की, अपने माता-पिता की और अधिकार वाले दूसरे लोगों की। क्या आप उन्हें केवल सही समय और सही ढंग से क्रोधित होना सिखाना चाहते हैं?

आप उन्हें ऐसे लोग बनने में कैसे सहायता कर सकते हैं? स्वयं ऐसे लोग बनें और अपने बच्चों के साथ ऐसे व्यवहार करें! नम्रता का नमूना देकर आप अपने बच्चों को नम्र बनने में सहायता करेंगे।

टिप्पणियां

[1]यूनानी शब्द कई रूपों में मिलता है। *यंग'स अनालिटिकल कन्कार्डेंस टू द बाइबल* में ''दीन'' और ''दीनता'' के नीचे *prautes* के अलावा यह *praotes, praos* और *praus* रूपों में मिलता है। (रॉबर्ट यंग, *यंग'स अनालिटिकल कन्कार्डेंस टू द बाइबल,* संशो. व सुधार. [नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1982], 652.) [2]वही। [3]मत्ती 5:5; 11:29; 21:5; 1 कुरिन्थियों 4:21; गलातियों 5:23; 6:1; इफिसियों 4:2; कुलुस्सियों 3:12; 1 तीमुथियुस 6:11; 2 तीमुथियुस 2:25; याकूब 3:13; 1 पतरस 3:4; 3:15. [4]विलियम बार्कले, *फलेश एण्ड स्पिरिट: एन इग्ज़ामिनेशन ऑफ़ गलेशियंस 5:19-23* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1962), 112. [5]वही, 112-14. [6]बार्कले ने कहा कि ''यीशु में धार्मिक क्रोध था और क्षमा करने वाला प्रेम था। केवल वही व्यक्ति जो *praus* था मोल-तोल करने वालों [मुनाफाखोरों] से जो इस में कारोबार करते थे, मन्दिर को शुद्ध कर सकता और व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री को क्षमा कर सकता है जिसे हर रूढ़िवादी गलत ठहराता था'' (बार्कले, 120-21)। मूसा एक और उदाहरण है। गिनती 12:3 कहता है कि मूसा पृथ्वी के सब लोगों से अधिक नम्र (दीन) था। [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम वाइट, जूनि., *वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), 401. [8]बार्कले, 121. [9]अरिस्टोटल *निक्रोमक्रेन एथिक्स* 4.5.